आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2691 • उदयपुर, रविवार 08 मई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

काचीगुड़ा श्याम मंदिर परिसर (कुक्कटपल्ली) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 24 अप्रेल 2022 को श्री श्याम मंदिर नजरेक काचीगुड़ा रेलवे स्टेशन, हैदराबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्री श्याम बाबा सेवा समिति, काचीगुड़ा रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 26, कृत्रिम अंग वितरण 20, कैलिपर वितरण 14 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि परमपूज्य हर्ष नंद जी महाराज (हैदराबाद, योग गुरु), अध्यक्षता परमपूज्य कमलेश जी महाराज (हैदराबाद, योग गुरु), विशिष्ट अतिथि श्री रामदेव जी अग्रवाल (श्री श्याम बाबा सेवा समिति), श्री रितिश जी जागीदार (परणी मित्र फाउंडर), श्रीमती सुमित्रा जी (महिला मोर्चा अध्यक्ष, सिकदंराबाद), रम्या जी (सत्य साक्षी संघ, कुक्कटपल्ली) रहे।

श्री नाथूसिंह जी शेखावत (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (शिविर सह प्रभारी), श्री बहादुर सिंह जी (सहायक), महेन्द्र सिंह जी (हैदराबाद आश्रम प्रभारी) ने भी सेवायें दी।

ऊना (हिमाचल प्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता–मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 24 अप्रेल 2022 को बाबा बाल जी राधाकृष्णा मंदिर, ऊना में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता हिमातों कर्श परिषद, ऊना रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 142, कृत्रिम अंग माप 51, कैलिपर माप 20 की सेवा हुई तथा 18 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि राष्ट्रीय संत बाबा बालजी (चेयरमेन राधाकृष्ण मन्दिर ट्रस्ट, ऊना), अध्यक्षता श्री प्रेम कुमार जी धूमल (पूर्व मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश), विशिष्ट अतिथि श्री वीरेन्द्र कंवर (कृषि एवं पशुपालन मंत्री), श्री सतपाल जी सती (चेयरमेन, प्रदेश वित्त आयोग), श्री जितेन्द्र जी कंवर (प्रदेश अध्यक्ष, हिमान्तों कर्श परिषद ऊना), श्री रसील सिंह जी मनकोटिया (शाखा संयोजक, हमीरपुर) रहे।

डॉ. सिद्धार्थ जी लांबा (अस्थि रोग विशेशज्ञ), श्री सुरेन्द्र जी सोनवाल (पी.एन. डो.), श्री नरेश जी वैष्णव (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में श्री अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव (शिविर प्रभारी), श्री प्रकाश जी डामोर, श्री मनीष जी हिन्डोनिया, (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (कैमरामेन) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक 08 मई, 2022

- रामपुर, उत्तरप्रदेश
- मनसा, पंजाब
- औरंगाबाद

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह

दिनांक : 8 मई, 2022

स्थान

महाजन भवन, सालीमार रोड, जम्मु

दिपर्चन मंगल कार्यालय राजापेठ, अमरावती, महाराष्ट्र

होटल रेगल, कपूल कम्पनी चौक, रेलवे स्टेशन के पास, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

इस स्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

अब रुकेंगे नहीं, थकेंगे भी नहीं

जो बन्धु बहिने, दुर्घटनाओं, बीमारी अथवा जन्म से ही हाथ–पैर से वंचित रहे अथवा विकृति का दंश झेलते रहे, उनकी पीड़ा को कम करने व उनकी दैनन्दिन जीवन शैली को सामान्य और आसान बनाने के लिए दानवीर भामाशाहों के सहयोग से मार्च 2022 में संस्थान ने छोटे–बड़े नगरों में निःशुल्क शिविर लगाकर दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग व कैलीपर लगाने और सहायक उपकरण वितरण का व्यापक स्तर पर कार्य किया है।

शेदुर्णी (महाराष्ट्र)– जलगांव अग्रवाल संगठन एवं अग्रवाल समाज शेदुर्णी के सौजन्य से 6 मार्च को दिव्यांग जांच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर पारस मंगल कार्यालय शेदुर्णी में सम्पन्न हुआ। जिसमें 119 दिव्यांग जन के कृत्रिम हाथ–पैर व 27 के कैलीपर बनाने के लिए पी.एण्ड.ओ. नियांश जी व टेक्नीशियन भगवती लाल जी ने माप लिया। डा. वरूण श्रीमाल ने 25 का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया। मुख्य अतिथि जलगांव हॉस्पीटल के सिविल सर्जन डॉ. जय प्रकाश जी रामानन्द थे। अध्यक्षता अग्रवाल समाज के श्री गोविन्द अग्रवाल ने की। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री पवन जी अग्रवाल, दुर्गेश जी अग्रवाल, गोपाल जी अग्रवाल, घनश्याम मी अग्रवाल, सीताराम जी अग्रवाल, अमित अग्रवाल व मनोज जी अग्रवाल थे। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद जी लढ्ढा ने अतिथियों का सम्मान किया।

खाटिमा (उत्तराखंड)– ओली सीमेंट एजेन्सी के सौजन्स से खाटीमा मुख्य चौराहे पर एजेन्सी के प्रांगण में 6 मार्च को सम्पन्न शिविरि में पी.एंड.ओ. डॉ. अरविन्द जी ठाकुर वे टेक्नीशियन भगवती लाल जी ने 24 दिव्यांगजन के लिए कृत्रिम पांव व 14 के कैलिपर बनाने का माप लिया। ऑर्थेपेडिक सर्जन डॉ. सचिन जी ने 14 दिव्यांगों का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया। शिविर प्रभारी मुकेश जी शर्मा ने मुख्य अतिथि श्री रविन्द्र सिंह जी एसडीएम ऊधम सिंह नगर, विशिष्ट अतिथि सर्वश्री मोहन जी नेगी, धर्मानन्द जी ओली, हरिदत्त जी कापडिया व श्रीमती जानकी देवी जी तथा शिविर अध्यक्ष श्री सतीश जी का स्वागत सम्मान किया। मुन्नासिंह जी , देवीलाल जी मीणा व हरीश जी रावत ने शिविर व्यवस्था में सहयोग किया।

हांसी (हरियाणा)–मानव जागृति मंच, हांसी (हिसार) के सहयोग से 13 मार्च को बजरंग आश्रम में आयोजित सहायता शिविर में डॉ. सिद्धार्थ लाम्बाने उपस्थित दिव्यांगजन की जांच कर 42 का निःशुल्क सर्जरी के लिए चयन किया। जिससे इनकी दिव्यांगता में कमी आ सके। पी.एंड.ओ. डॉ. गौरव तिवारी व टैक्नीशियन श्री नाथुसिंह जी 27 दिव्यांगों के लिए कृत्रिम अंग व 29 कैलीपर बनाने का माप लिया। शिविर प्रभारी लालसिंह जी के अनुसार मुख्य अतिथि विधायक श्री विनोद भयाना थे। अध्यक्षता श्री मदन मोहन जी सेठी ने की। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री श्याम जी माखीजा, सतीश जी कालरा, जगदीश जी छाबड़ा व डॉ. रामस्वरूप जी यादव थे। आश्रम प्रभारी रामसिंह जी, मनीश जी हिन्डोनिया, बहादुर सिंह जी व सत्यनारायण जी ने शिविर का संचालन में सहयोग दिया।

सिरमोर (हिमाचल प्रदेश)– ज्ञानचन्द धर्मशाला में नवशक्ति दुर्गा मंडल एवं क्लब के सौजन्स से 13 मार्च को दिव्यांग जांच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि समाज सेवी श्री अरूण जी गोयल थे। अध्यक्षता श्री सतीश जी गोयल ने की। शिविर में 15 दिव्यांगजन के लिए कृत्रिम अंग व 14 कैलीपर बनाने के लिए संस्थान की पी.एंड.ओ. टीम ने माप लिया।

गाडरवारा (मध्यप्रदेश)– नरसिंहपुर जिले के गाडरवारा नगर स्थित प. दीन दयाल उपाध्याय सभागृह में धनलक्ष्मी मर्चेन्डाइज प्रा. लिमिटेड के सौजन्य से दो दिवसीय (13–14 मार्च) शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें 406 दिव्यांगजन का पंजीयन हुआ। इनमें से 116 के लिए कृत्रिम अंग व 16 कैलीपर बनाने का पी.एंड.ओ. डॉ. नेहा जी व टेक्नीशियन किशनलाल जी ने माप लिया। जबकि आर.के.सोनी जी ने 78 दिव्यांगों का सुधारात्मक सर्जरी के लिए चयन किया। शिविर के मुख्य अतिथि धनलक्ष्मी मर्चेन्डाइज के निदेशक श्री दीपक जी शर्मा थे। अध्यक्षता कम्पनी के निदेशक श्री समर सिंह जी ने की। विशिश्ट अतिथि प्रबंधक शमशेर सिंह जी, उद्योगपति दीपेश जी, विजयराव जी, अनूप जी, निदेशक धमेन्द्र जी व वरिश्ठ प्रबंधक रूद्रप्रताप सिंह जी थे। प्रभारी हरिप्रताप जी ने उन्हें सम्मानित किया।

चन्द्रपुर (चन्द्रपुर)– पजांबी समाज सेवा समिति के सहयोग से 13–14 मार्च को आयोजित शिविर मं 475 दिव्यांगजन का रजिस्ट्रेशन हुआ। जिनमें से 186 के लिए कृत्रिम अंग व 32 के लिए कैलीपर बनाने का माप पी.एंड.ओ. डॉ. नेहांश मेहता व टेक्नीशियन श्री नरेश जी वैश्णव ने लिया। डॉ. विजय कार्तिक ने 16 दिव्यांग का सुधारातत्मक सर्जरी के लिए जांच कर चयन किया। शिविर प्रभारी अखिलेश अग्निहोत्री ने मख्य अतिथि महापौर श्रीमति राखी जी काचनवाल व शिविर अध्यक्ष पंजाबी समाज के अध्यक्ष श्री अजय कपूर, पूर्व अध्यक्ष विक्रम जी भार्मा व कुकू जी साहनी का स्वागत–सम्मान किया।

चुरू (राजस्थान) – वन विहार स्थित सामुदायकि भवन में एल.एन. मेमोरियल चेरीटेबल ट्रस्ट के सहयोग से 15 मार्च को सम्पन्न हुए कृत्रिम अंग माप शिविर में 55 दिव्यांगों के कृत्रिम अंग व 26 के कैलीपर बनाने का मेजरमेंट करने के साथ ही 20 दिव्यांगों का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया गया। मुख्य अतिथि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव श्री प्रमोद जी बंसल थे। अध्यक्षता जिला आयुर्वेद अधिकारी श्री अनिल जी मिश्रा ने की। विशिष्ट अतिथि पीडीयू मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. महेश मोहन जी, पुलिस उप अधीक्षक ममता कुमारी जी, एल.एन. मेमोरियल चेरीटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. महेश जी शर्मा समाज सेवी, तेज प्रकाश जी भार्मा व बनवारी लाल जी भार्मा थे। शिविर प्रभारी लालसिंह भाटी के अनुसार कृत्रिम अंग निर्माण के लिए माप लेने व ऑपरेशन के लिए दिव्यांगजन का चयन का कार्य डॉ.रामनाथ जी ठाकुर व श्री नाथूसिंह जी की टीम ने किया।

जबलपुर (मध्यप्रदेश)– विंध्य भवन, बैकंट हॉल कटिंगा में वरिष्ठ अधिवक्ता श्री आर.एन.सिंह जी के सहयोग से 23 मार्च को सम्पन्न शिविर में 27 दिव्यांगों को कृत्रिम हाथ–पैर लगाएं गए जबकि 39 को कैलीपर का वितरण किया गया। मुख्य अतिथि अतिरिक्त आयुक्त(जीएसटी) थे। अध्यक्षता श्री एच.एन.मिश्रा ने की। विशिश्ट अतिथि डॉ.एच.पी.पटेल, श्री आर.एन.गुप्ता, शाखा प्रेरक श्री डी.आर. लखेरा, शाखा प्रेरक श्री आर.के.तिवारी जी व हनुमान प्रसाद जी थे। शिविर प्रभारी मुकेश जी शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया व संचालन में टेक्नीशियन श्री नाथुसिंह जी, भगवती जी पटेल, प्रकाश जी डामोर, देवीलाल जी मीणा व हरीश रावत ने सहयोग किया।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

वृद्ध जटायु ने खल के
सिर उड़ आघात किया।
किन्तु पक्ष उसका पापी ने
काट के तो सा गिरा दिया।।

और जैसे अंगद जी ने जामवंत जी ने कहाँ धन्य हो जटायु वृद्ध जटायू दशरथ जी का मित्र जटायु। राम जी भगवान का भक्त जटायु जिन जटायु को राम भगवान ने अपने गोद में लिया। बोले तात् कहो तो आपके प्राणों को स्थिर कर दूं। आपको जीवन जीने की इच्छा हो तो बता दीजिए। प्रभु आपके नाम का स्मरण करके भी कोई जब चोला बदल लेता है, तो उसकी देह–देवालाय धन्य हो जाता है। उसका मरण धन्य हो जाता है, उसका जीवन धन्य हो जाता है अन्यथा हानि– लाभ जीवन–मरण विधि हाथ ये तो विधि के हाथ में है। प्रभु में आपकी गोद में हूँ। आप तो मेरे को आशीर्वाद दीजिए। और प्रभु ने कहा था उस समय आप पिताजी को जाकर के ये रावण ने जो कुमति की है। रावण ने सीता का हरण किया ये आप दशरथ जी मेरे पिताजी को मत कहियेगा। रावण अपनी मौत मरेगा। कुम्भकर्ण के साथ जब आयेगा। मेघनाथ के साथ आयेगा। अपनी कसी को खुद बतायेगा। इस तरह की कथा जब करना लगे तो सम्पाति ने कहा मेरे भाई की बात कर रहे हो आप तो। सूर्य भगवान को पौंछ करने के लिए सम्पाति कहते हैं। जटायू दोनो उड़े थे बहुत नजदीक पहुँच गये मैं अभिमानित था देह का अभिमान कभी –कभी सोचियेगा आपको और हमारे को भी देह का अभी मालूम मैं, मेरा ये मेरी वस्तु है, ये मेरा धन है, ये मेरी तस्वीर मैंने मित्रों को मन में लगा रखी ये इनके मन में एक भाव लगा रखा में बहुत बड़ा आदमी मिर्चीबड़ा, दहीबड़ा, आलूबड़ा, मैं बड़ा तो गिद्धराज सम्पाति ने कहा मैं अभिमान के बस सूर्य के और नजदीक चला गया। और जटायू जल्दी से नीचे आ गया। वो तो बच गया और मेरे पंख जल गये। उस समय मेरे को आकाशवाणी हुई थी। के जब वानर जी को जब मिलेगे सम्पाति वानर मिलेगे तो तेरे पंख आ जायेगें। देखो –देखो मेरे पंख आ गये आनन्द आ गया।

सुख में ना इतरायेंगे।
दुख में ना घबरायेगे।।

सम्पादकीय

गंतव्य और मंतव्य दोनों बराबर हो तो व्यक्ति की सफलता निश्चित होती है। सामान्यतः अनेक लोगों को अपना गंतव्य भी ज्ञात नहीं होता। जाना है पर जाना कहाँ है? चलते सभी हैं किन्तु कहाँ तक चलना है, पर गंभीरतापूर्वक कोई विचार नहीं करता। जीवन भर चलते रहने के बाद भी आदमी कहीं न पहुँचे और जहाँ पहुँचे वह गंतव्य ही न हो तो यह जीवन की सबसे बड़ी दुर्घटना ही है। और यदि गंतव्य का ज्ञान भी हो और मंतव्य न हो तो? तो कोई भी व्यक्ति कैसे जायेगा। जब इच्छाशक्ति ही न हो तो इच्छा की पूर्ति कैसे होगी? मंतव्य यदि सही हो तो व्यक्ति सकारात्मक होता है। मंतव्य यदि स्पष्ट न हो तो भावात्मक अस्थिरता को होना ही है। मंतव्य ही व्यक्ति में चेतना, उत्साह और सफलता के भावों का संचारण करता है। यदि मंतव्य न हो तो समर्थ व्यक्ति भी सफल नहीं हो सकेगा क्योंकि वह किसी भी कार्य को पूर्ण मनोयोग से नहीं करेगा। अतः मंतव्य और गंतव्य दोनों स्पष्ट होने ही चाहिये।

कुछ काव्यमय

मंतव्य यदि सच्चा होगा तो,
दूर नहीं होगा गंतव्य।
मिले सफलता दैनंदिन फिर
उज्ज्वल होगा भवितव्य।
इच्छाशक्ति ही हम सबको,
ऊर्जावान् बनाती है।
सद्इच्छा ही हमको
मंजिल तक ले जाती है।

अपनों से अपनी बात

दो तरह के दंश

चाटुकार अथवा मायावी की बातों से मनुश्य की आत्मा अपनी सुध–बुध खो बैठती है तथा अपने लाभ–हानी के अंतर को भूलकर मनुष्य कुमार्ग के गर्त में गिर पड़ता है।

प्राचीन काल में किसी देश का राजा बड़ा बुद्धिमान और कुशाल शासक था। उसने अपनी राजसभा में उच्चकोटि के विद्वानों तथा धर्म मर्मज्ञों को स्थान दिया हुआ था। प्रतिदिन उन सबसे विभिन्न विशयों पर चर्चा तथा विचार विमर्श करता रहता था। इस प्रकार वह अपने राज–कार्य का न्यायपूर्वक निर्वाह करता था।

एक दिन उसने अपने दरबार में उपस्थित पदाधिकारियों से प्रश्न किया, 'इस संसार में सबसे तेज काटने वाला जीव कौन है?'

उत्तर में किसी ने बर्र, किसी ने

मधुमक्खी, बिच्छु, सर्प आदि को तेज काटने वाला बताया। किंतु राजा उनके उत्तरों से संतुष्ट नहीं दिखाई दिया। तब उसने अपने वयोवृद्ध और अनुभवी महामंत्री की और देखा, जो मौन रहकर सभी विद्वानों के उत्तरों को सुन रहे थे। राजा ने कहा, मंत्रिवर आपने कुछ बताया नहीं? आप भी अपना मन्तव्य रखें। मंत्री बोले, राजन मेरे विचार से विशधर जन्तुओं की अपेक्षा सर्वाधिक तेज काटने वाले दो प्रकार के मानव होते हैं– निंदक और चाटुकार। मंत्री का उत्तर सुनकर सभा में सन्नाटा छा गया। राजा सहित सभी की अपनी तरफ पश्नमय दृष्टि को देखकर अपनी बात को स्पस्ट करते हुए मंत्री जी ने कहा राजन, ईर्श्या और द्वेश आदि के विश से भरा हुआ निदंक, मनुश्य को पीछे से काटता है, जिसके प्रभाव से आत्मा तिलमिला उठती है, और दूसरा चाटुकार व्यक्ति हितेशीबनकर अपनी वाणी से खुशामद का मीठा विश भरकर सम्मुखसे ही व्यक्ति के मन में उतारता है। परिणाम स्वरूप वह अंहकार से चूर होकर अपने दुर्गुणों को ही गुण मानकर पथभ्रश्ट हो जाता है। वह सत्यासत्य का निर्णय किए बिना ही बुरे कर्म या विकर्म करता हुआ आत्मा के पतन की ओर बढ़ता चला जाता है।

सभासदों ने मंत्री के सम्मान में तालियां बजाई। राजा भी इस उत्तर से संतुष्ट हो गया। उसे अपने महामंत्री की बुद्धिमत्ता पर गर्व था। **– कैलाश मानव**

दुर्जन और सज्जन

सोना, सज्जन, साधुजन
टूट जुड़े सौ बार।
दुर्जन कुम्भ कुम्हार के,
एके धके दरार।।

प्रसिद्ध संत सरयूदास जी महाराज एक बार रेल में यात्रा कर रहे थे। एक मोटा हृष्ट–पुष्ट एवं मजबूत कद–काठी का पुरुष उनके पास में बैठ गया। वह व्यक्ति बार–बार सरयूदास जी के पास खिसक रहा था और अपना पैर उनके पैर के ऊपर रखने की कोशिश कर रहा था। हर थोड़ी–थोड़ी देर में वह उनको धक्का देने की कोशिश करता। सरयूदास जी महाराज थोड़ी देर तक सब– कुछ सहन करते रहे, परंतु वह व्यक्ति अपनी हरकत से बाज नहीं आया। वह उससे जितना

बचने की कोशिश करते, वह व्यक्ति उतना ही अधिक उनके पास खिसककर, उन्हें परेशान करता। अब बहुत देर हो चली थी।

महाराज जी ने अत्यन्त प्रेमपूर्वक उस व्यक्ति से कहा– भाई लगता है आपके पैरों में दर्द है। लाइए मैं आपके पैर दबा देता हूँ। ऐसा कहते हुए उन्होंने उसके पैर अपनी गोद में रख लिए और प्यार से दबाने लगे। उस व्यक्ति को अपनी गलती का अहसास हो गया और वह शर्म से पानी–पानी हो गया। उसने अपने पाँव हटा लिए तथा हाथ जोड़कर, महाराज जी से अपनी गलती के लिए क्षमा माँगते हुए कहा– आपके जैसे सज्जन पुरुष ही ऐसा कर सकते हैं। मैं तो आपको कष्ट दे रहा था, परंतु बदले में आपने तो मेरे पैरों को दबाना शुरु कर दिया। मैं आपके प्रेम और दया भाव को शत–शत वंदन करता हूँ। ऐसा कह कर उस व्यक्ति ने सरयूदास जी के पाँव छू लिए। दृष्टिकोण अगर अच्छा हो तो दुर्जन लोगो के साथ भी सज्जनता से रहा जा सकता है और जो लोग सज्जन होते हैं, वे झगड़ते नहीं हैं, वे विवाद खड़ा नहीं करते, बल्कि वे तो प्रेम के अनंत स्रोत होते हैं। **–सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

आम तौर पर सेवा कार्यों का पैमाना इस स्तर का हो जिस स्तर पर कैलाश काम कर रहा था तो उसके लिये कोई संगठन या संस्था आवश्यक होती थी मगर यह आश्चर्य की ही बात थी कि कैलाश की न कोई संस्था थी न ही कोई रसीद बुक। ये 5–7 लोग आपस में मिलकर ही निर्णय लेते और उन्हें कार्यरूप में परिणित करते। इनके कार्यों से प्रभावित होकर सेन्ट्रल स्कूल के प्रिन्सिपल आर.डी. दीक्षित भी सक्रिय रूप से इनसे जुड़ गये।

खाना बनाने की व्यवस्था हो गई तो अब समस्या यह उत्पन्न हुई कि इसके वितरण का कार्य कौन करेगा। कैलाश को प्रतिदिन कार्यालय जाना पड़ता था, उसके लिये यह संभव नहीं था। गिरधारी ने भी प्रेस खोल ली थी, वह भी व्यस्त हो गया था। इनकी टोली में रेलवे में कार्यरत टी.जी. पागे भी थे, वे भोजन वितरण का जिम्मा उठाने को तैयार हो गये। पागे सोहनलाल विजयवर्गीय के घर से खाना उठाते तथा अस्पताल में हर रोगी के बिस्तर तक जाकर खाना पहुँचाने का कार्य करने लगे। धीरे धीरे कार्य नियमित हो गया। कैलाश को या अन्य साथियों को भी जब–तब समय मिलता तो वे भोजन वितरण के कार्य में हाथ बंटाते।

कुछ दिनों पश्चात् कैलाश को एक व्यक्ति मिला। उसकी बातें सुन कैलाश आश्चर्यचकित रह गया और प्रसन्न भी हुआ। इस व्यक्ति ने बताया कि सेटेलाइट अस्पताल में भोजन वितरण के कार्य से प्रेरणा लेकर उसने भी अपने गांव के अस्पताल में भोजन वितरण का कार्य शुरु कर दिया है। कैलाश इस व्यक्ति को नहीं जानता था, उसने पूछ लिया –मैं तो आपसे मिला भी नहीं, फिर आप मुझे कैसे जानते हो? तब व्यक्ति ने बताया कि वह कुछ दिनों तक सेटेलाइट हॉस्पिटल में भर्ती रहा था। उसने कैलाश व साथियों को रोगियों की सेवा करते और उन्हें भोजन कराते देखा तो बहुत खुशी हुई। इसी से प्रेरणा लेकर उसने अपने गांव में भी यह कार्य शुरु कर दिया।

अंश - 088

स्क्रीन यूज एवं बुजुर्ग

टीवी या स्मार्टफोन स्क्रीन का ज्यादा इस्तेमाल बुजुर्गो को बहुत सी समस्याएं दे सकता है। कुछ अन्य एक्टिविटीज इसका विकल्प हो सकती हैं। कुछ टिप्स से समझें–

व्यायाम करें – ज्यादा देर एक ही जगह बैठने से मोटापा जैसी समस्या पैदा हो सकती हैं। अतः नियमित व्यायाम करें।

आइ रिलेक्सेशन – आंखों को पर्याप्त आराम मिलना जरूरी है। ज्यादा देर स्क्रीन पर समय बिताना इन्हें कमजोर कर सकता है।

टहलें जरूर – सुबह–शाम के समय टहलें। अपने एज ग्रुप या कॉलोनी ग्रुप को जॉइन करें।

लत न पड़े – मोबाइल फोन या टीवी देखने में कोई बुराई नहीं है, बशर्ते इसकी लत न पड़े।

नींद का पैमाना – यह भी न हो कि स्क्रीन आपकी नींद चुरा ले। अतः भरपूर सोएं और हैल्दी रहें।

पढ़ना भी साथी – हर समय कोई आस–पास नहीं हो सकता। ऐसे में किताबें या अखबार पढ़ें।

कम करे स्क्रीन टाइम – स्क्रीन टाइम बढ़ना मानसिक तनाव पैदा करता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

कृतज्ञता, मनुष्य की सर्वाधिक सशक्त सकारात्मक भावना

जब आप किसी को, किसी के द्वारा की गई मदद या काम के बदले धन्यवाद देते हैं तो उससे दूसरे की को खुशी और संतुष्टि तो मिलती ही है, यह स्वयं को भी फायदा पहुँचाता है। मनोवैज्ञानिकों को मानना है कि यह स्वयं के लिए, समान स्तर पर अच्छा हैं। इनके मुताबिक, हालांकि कृतज्ञता एक सकारात्मकता भावना है और इसे सब जानते है, लेकिन धन्यवाद कहने के पीछे के विज्ञान को जानने के लिए दशकों तक कोई खास प्रयास नहीं किया।

पिछले कुछ वर्षो में परीक्षण के दौरान पाया कि कृतज्ञता प्रकट करना मानवता की सबसे शक्तिशाली भावना है जो स्वयं को खुश रखती और जीवन के प्रति, विशेषतः मुश्किल दौर में, आपके रवैये को बदल सकी है। इसके अलावा मनोवैज्ञानिक इस कृतज्ञता के पीछे मस्तिष्क की रहस्यमय रासायनिक प्रक्रिया और इसे प्रदर्शित करने के सबसे अच्छे तरीके का पता लगाने का प्रयास कर रहे है। मियामी यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर माइकल मैककुलाफ जिन्होंने इस पर अध्ययन किया, का कहना है कि कृतज्ञता जताने वाले बहुत जीवंत, सकारात्मक, सुलझे हुए,जागरूक और उत्साही प्रकृति के होते है। वे दूसरे लोगों से ज्यादा जुड़ाव महसूस करते है। लोगों द्वारा हर रोज या हर सप्ताह लिखी जाने वाली डायरियाँ जिनमें वे उन लोगों के नाम लिखते हैं, जिनके प्रति उन्होंने कृतज्ञता महसूस की या जतायी, अब नियमित थैरेपी टूल या उपचार पद्धति बनती जा रही है। कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में मनोविज्ञान की प्रोफेसर राबर्ट एमोंस का भी कहना है कि कृतज्ञता जताने के लिए उन लोगों पर ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत ज्यादा होती है जो आपसे ज्यादा जुड़े हुए है। ऐसे में सोचें कि उनके बिना जीवन कैसा होता।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन

2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार

2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं

2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं

2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी

2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र

आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन

वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ

6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ

विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

जब बाँसवाडा का आदेश आया, हतप्रभ रह गया। उदयपुर में सेवाधाम का उदघाटन अभी–अभी हुआ, काम भी बाकी है, पास में एक प्लॉट मिला है, एम.पी. जी. आदरणीय गर्ग साहब हुआ करते थे, अभी इस दुनियाँ में होंगे तो उनको प्रणाम करता हूँ, बहुत प्रार्थना की उनसे, दो तीन बार जयपुर गया, संचार मंत्री पायलट साहब सोहन लाल जी पूर्बिया साहब के सहयोग से, गिरिजा जी मैडम उस समय केन्द्र में मंत्री हुआ करते थे। उन्होंने चिठ्ठी लिखी, पायलट साहब को। चिठ्ठी बडी अदभुत थी। बोले–पायलट जी मैंने अपने जीवनकाल में कैलाश जी को दिव्यांगों के कल्याण के लिए दौड़ते हुआ देखा है।

सिसकियां गूंजी थी, चमन में,
कौन रोया पता तो किया।
जिन्दगी धूप सी लगी थी जिन्हें,
प्यार का एक फूल अता तो किया।।

बोले–मैंने इन्हें अदभुत रूप से देखा है। झुग्गी झोंपडी में जाने का, पहाड –पहाड गये हैं, बहुत पौष्टिक आहार, पोषाहार, सूखडी, कपड़े, चिकित्सा का बहुत अच्छा काम किया है। आपने जो इनका ट्रॉंसफर बाँसवाडा किया है, वो निरस्त कर दीजिये, उनके पी.ए. साहब ने पत्र लिखा, अदभुत? बाँसवाडा जाना ही था, गर्ग साहब बोले–कैलाश जी बाँसवाड़ा में काम काफी पेंडिंग पड़ा हुआ है। आप जैसे अच्छे अधिकारी वहाँ चाहिए, कभी–कभी ये बातें जब कार्य नहीं करने का होता है, अच्छी बात है। बाँसवाड़ा गये रोड़वेज बस स्टेण्ड के पीछे एक भवन टेलिकम्युनिकेशन का, एक भवन एक्सचेंज का, एक भवन कार्यालय का, वहाँ सीनियर अकाउण्ट ऑफिसर का काम सम्भाला।

शनिवार पाँच साढे पाँच बजे बस पकड़ता, रात आठ साढे आठ बजे बस पकड़कर उदयपुर पहुँचता, प्रशान्त कई बार लूना लेकर लेने आता। मैं पीछे बैठकर आता, नारायण भगवान ने रोम–रोम में तरंगें भर दी थी। कभी वो कुछ बातें करने लगता, मैं कहता प्रशान्त घर जाकर बात करते हैं, फिर पहुँचकर पूछता–सेवाधाम थर्ड फ्लोर पर जो कमरे बन रहें हैं, क्या हुआ? उधर कमला जी भी उदयपुर में थी। कल्पना जी भी मदद करती थी, उस समय जगदीश जी आर्य भी साथ में थे। देवेन्द्र चौबीसा जी भी साथ में हो गये थे, भगवती लाल जी चौबीसा जो हमें अंतरिक्ष से आशीर्वाद दे रहे हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 441 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023